रामकथा के विविध परिदृश्य

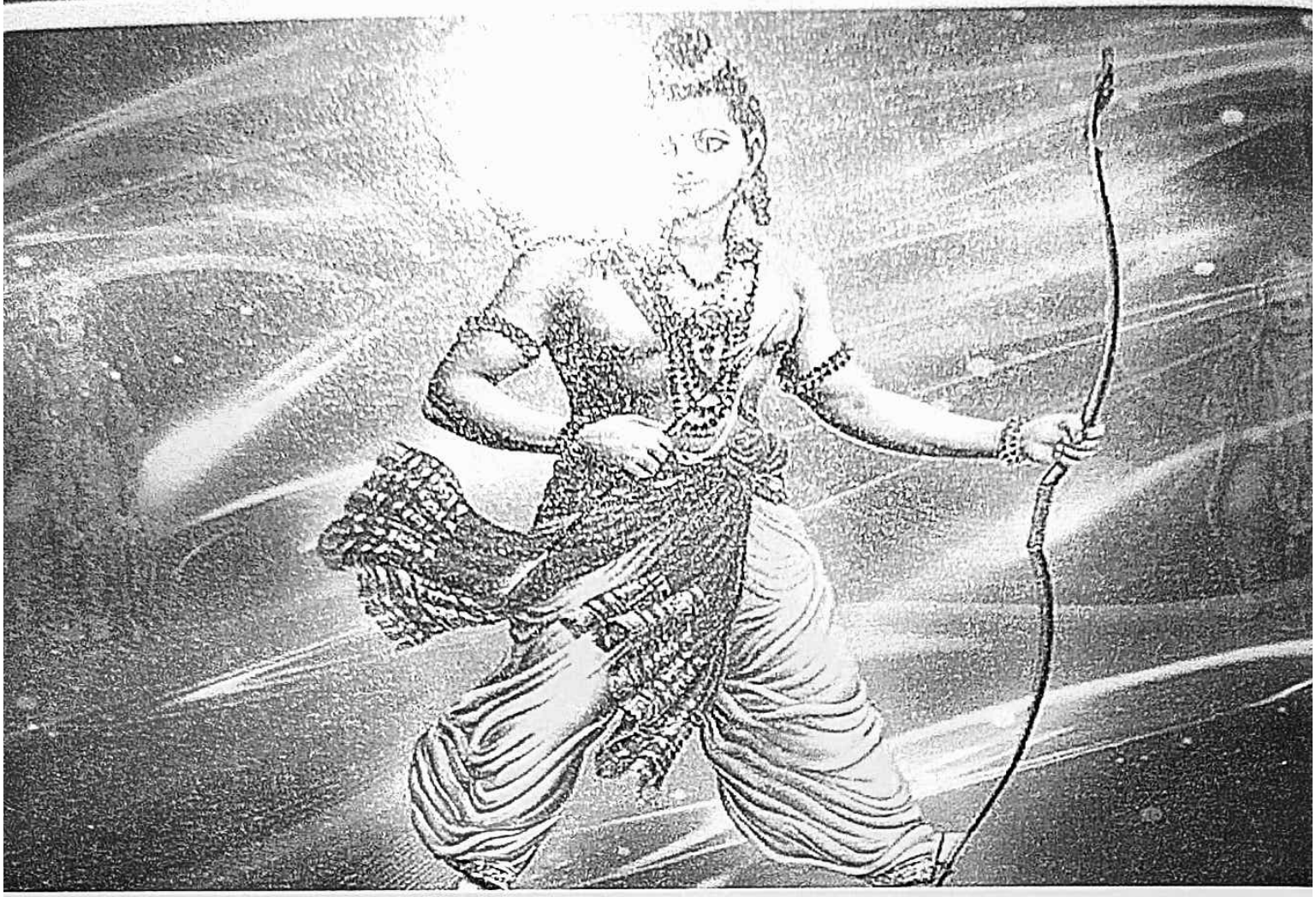

संपादक : डॉ. शेख शहेनाज़ बेगम अहेमद

रामकथा के विविध परिदृश्य

संपादक
डॉ. शेख शहेनाज़ बेगम अहेमद
विभागाध्यक्ष, हिंदी-विभाग
हुतात्मा जयवंतराव पाटील महाविद्यालय,
हिमायतनगर, नांदेड

समता प्रकाशन
कानपुर (देहात)-209303

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक, लेखक की लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक या इसके किसी भी अंश का किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता, इसे संक्षिप्त, परिवर्धित कर प्रकाशित करना कानूनी अपराध है।

ISBN : 978-93-93403-04-9

पुस्तक	:	रामकथा के विविध परिदृश्य
संपादक	:	डॉ. शेख शहेनाज़ बेगम अहेमद
कापीराइट	:	प्रकाशक
प्रकाशक	:	**समता प्रकाशन** बजरंगनगर, रूरा- कानपुर (देहात) 209303 Mob. : 9450139012, 7007749872
ई-मेल	:	samataprakashanrura@gmail.com
संस्करण	:	प्रथम, 2022 ई.
मूल्य	:	500/-
शब्द-सज्जा	:	रुद्र ग्राफिक्स, हनुमन्त विहार, नौबस्ता, कानपुर-21
मुद्रक	:	आर्यन डिजिटल प्रेस, नई दिल्ली

RAMKATHA KE VIVIDH PARIDRASHYA
Edited : Dr. Shekh Shahenaj Begam Ahemad
Price : Five hundred only.

प्रभु श्रीराम जी
के
चरणों में
सादर...

अनुक्रम

1.	संस्कृत नाटकों में रघुनाथगाथा **डॉ. बालकृष्ण शर्मा**	11
2.	गाइअ रामहि **डॉ. नौनिहाल गौतम**	15
3.	रामकथा की उपेक्षित नारी पात्र : कैकेयी **डॉ. निधि कश्यप**	19
4.	रामचरित मानस में लोकमंगल की भावना **डॉ. (श्रीमती) अर्चना दीवान** **डॉ. (श्रीमती) कविता ठक्कर**	24
5.	अरण्यकाण्डीय मानस-विवेचन **डॉ. मीनाक्षी व्यास**	29
6.	रामचरित मानस में लीला दर्शन **डॉ. उषा तिवारी**	42
7.	आदर्श रामराज्य की परिकल्पना **डॉ. पोपट भावराव बिरारी**	48
8.	वर्तमान पथभ्रष्ट राजनीति और रामराज्य **उमेश पाठक**	53
9.	रामचरितमानस की प्रासंगिकता **डॉ. रश्मि वार्ष्णेय**	66
10.	रामचरितमानस की सांस्कृतिक मीमांसा **डॉ. दीपक विनायकराव पवार**	75
11.	स्वयंभू रचित 'पउमचरिउ' की रामकथा **डॉ. शेखर पांडुरंग घुंगरवार**	81
12.	संस्कृति पुरुष श्रीराम **डॉ. नजमाबानु अब्दुल समद मलेक**	87
13.	रामचरितमानस में साहित्य साधना **डॉ. शेख शहेनाज बेगम अहेमद**	93

13.

रामचरितमानस में साहित्य साधना

डॉ. शेख शहेनाज बेगम अहेमद

भारतीय हिंदी साहित्य में भक्तिकाल को स्वर्ण युग कहा जाता है। इस काल में निर्गुण और सगुण भक्ति शाखाएँ तथा उनके प्रणेता अपनी–अपनी जगह योग्यता सिद्ध करते है। इसी युग में हिंदी में महान काव्यकार है जिन्हें हिंदी के साहित्यकार के सूर्य और कवि कहा जाता है। दोनों का काव्य हिंदू–संस्कृति और हिंदू जन जीवन की प्रेरणात्मक भावनाओं से युक्त है। यह जन समाज में फैले हुए वैराग्य को हटाकर आशा का संचार करता है। सूर ने कृष्ण के लोकरंजक स्वरूप को सामने लाकर वैराग्य हटाकर समाज को यदि जीने की आशा बँधाई तो तुलसी ने मर्यादा पुरुषोंत्तम राम के लोक–रक्षक रूप को सामने लाकर शक्ति और सम्बल प्रदान किया है।

तुलसीदास जी हिंदी के उच्चकोटि के कवि है। सभी दृष्टियों से उनकी कविता साहित्य में शीर्ष स्थान प्राप्त करने की अधिकारिणी है। उनका क्षेत्र बड़ा विशाल था और तत्कालीन परिस्थिति भी बड़ी भयावह थी। विदेशी सत्ता ने यहाँ पर पूर्णरूप से अपना अधिकार जमा लिया था। ऐसी विभिन्न स्थिति में तुलसी ने जो अभिनव साहित्य का निर्माण किया, उससे समाज को एक नयी दिशा मिली और भावों की पावन सुरसरि में स्नान कर अपने को अल्हादित और रसमग्न करने लगा। समाज में लोकमंगल की साधना की सृष्टि हुई। ''स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा' भक्ति कवि की रचना कितनी 'परान्त सुखाय' बनी उसे आज भी इस देश की जनता जानती है।''[1] शील शक्ति और सौंदर्य निधान राम का मर्यादा पुरुषोत्तम रूप अंकित कर उन्होंने समाज की प्राण–प्रतिष्ठा की। तुलसी यह काव्य साधना मंजुल मुकुर है। जिससे हमें तत्कालीन राजनीतिक, धार्मिक सामाजिक सभी परिस्थितियों का स्पष्ट चित्र प्रतिबिंबित होता है। तुलसी के साहित्य के विषय में आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार विश्लेषण करके बताया गया है कि ब्रम्हा के सत्यस्वरूप की अभिव्यक्ति और प्रकृति को लेकर गोस्वामी तुलसीदास की भक्ति पद्धति निरंतर चली है। उनके राम पूर्ण धर्म स्वरूप राम ही है। ''राम के लीला के क्षेत्र के भीतर धर्म के विविध रूपों का

प्रकाश उन्होंने देखा है। धर्म का प्रकाश अर्थात ब्रम्हा के सत्यरूप का प्रकाश इस रूपात्मक व्यक्त जगत के बीच होता है।"[2]

रामचरितमानस में जिस भरत के लिए ही कैकेयी ने सारा अनर्थ खड़ा किया वे ही अपनी माँ को जब धिक्कारते है तब कैकेयी को कितनी आत्मग्लानि हुई होगी, इसका भी अंदाजा हमें होता है। ऐसी आत्मग्लानि उत्पन्न करने की पीड़ा कवि के मन में भी रही होगी। इस सोपान की आत्मग्लानि और किसी युक्ति से उत्पन्न नहीं की जा सकती थी। तुलसी जी राष्ट्र समाज और धर्म के अनन्य साधक थे।

तुलसीदासजी ने अपने युगजीवन की युगीन परिस्थितियों को साहित्य में सांस्कृतिक जनचेतना के रूप में प्रस्तुत किया है। तुलसी के साहित्य में जनचेतना को स्पष्ट करने के पूर्व संस्कृति शब्द का ज्ञान होना भी आवश्यक है। युगीन अनुभूतियों के भीतर से मनुष्य जिस महान सत्य की व्यापकता और परिपूर्णता को क्रमबद्ध रूप में प्राप्त करता जा रहा है, जिसे हम संस्कृति शब्द द्वारा अभिव्यक्त करते है। महान विचारक संस्कृति शब्द को परिभाषित करते डॉ. भगीरथ कहते है–"संस्कृति और कुछ नहीं, जीवन के सौंदर्य निर्माण और विकास की प्रक्रिया है।"[3]

तुलसीदास जी युगदृष्टा कवि थे। उन्होंने बड़ी निर्भिकता से तत्कालीन शासकों की टूर्नीति, स्वेच्छारी वृत्ति, निरंकुशता शासन पद्धति एवं सामान्य जनता की त्रस्त दशा तथा आर्थिक हीनता का वर्णन कर आर्थिक वैषम्य की आड़ में पनप रहे सामाजिक विद्रोह की ओर संकेत किया है–

"ऊँचे नीचे करम धरम अधरम करि
पेट ही को पचत बेचत बेटा बेटकी
तुलसी बुझाई एक राम घनश्याम ही ते,
आगि बड़वागि ते बड़ी है आग पेट की।।"[4]

तुलसी की यह पंक्तियाँ तत्कालीन ही नहीं बल्कि आज के कटु सामाजिक सत्य को उजागर करती है। जिसकी भीषणता में आज सारा विश्व भून रहा है। यही उनके मंगलमयी दूरदृष्टि का मूल था– भेदभाव से शून्य साम्यवादी समाज की स्थापना, भीषणता और सरसता–कोमलता और उठारता, कटुता और मधुरता, प्रचंडता और मृदुता का समन्वय ही लोकधर्म का सौंदर्य है। सौंदर्य का यह उच्चाटन असौंदर्य के आवरण को हटाकर होता है।

तुलसी के काव्य में सभी रसों का पूर्ण परिपाक हुआ है। जिस सिद्ध हस्तता के साथ आपने करूण रस का वर्णन किया है। वैसा ही वीर रस का तुलसी ने राम को रसिक रूप रूप में भी चित्रित किया है। गीतावली में वे झूला झूलते है और फाग खेलते हैं उस समय का चित्र भी देखने लायक है।

"अति मचत छूटत कुटिल कच, छवि अधिक सुंदर पावहीं,
पट उड़त भूषन खसत, हँसि–हँसि अपर सखी झुलावही।"[5]

जिस मनोरमता से रसिक रूप का वर्णन किया है उसी प्रकार श्रृंगार और भयानक रसका भी विवेचन किया है।

तुलसी ने अपने प्रतिभाशाली व्यक्तित्व से अपने वर्ण्य विषय के मार्मिक स्थलों को भली–भाँति पहचान लेता है और उनका यथा तथ्य चित्रण कर देता है। रामचरित मानस में अनेक मार्मिक स्थल है और उनका पूर्ण विवेचन पूरी तल्लीनता के साथ तुलसी ने किया है। इसी लिए वह भारत की जनता के लोक नायक रहे है। आ. रामचंद्र शुक्ल ने लिखा है– "मानव प्रकृति के जितने अधिक रूपों के साथ गोस्वामी जी के हृदय का रागात्मक सामंजस्य हम देखते है उतना अधिक हिंदी भाषा के किसी कवि के हृदय का नहीं। यदि कहीं सौंदर्य है तो कही घृणा, अत्याचार, कहीं अलौकिता, विस्मय पाखंड है तो कहीं कुढ़न शोक और करूणा, कहीं आनंदोत्सव, उल्हास, उपकार है तो कहीं कृतहनता, कहीं महत्व है तो कहीं दीनता तुलसीदास के हृदय में प्रतिबिंब भाव से विद्यमान है।"[6]

तुलसी जैसे प्रतिभाशाली कवि ने अपनी लोकमांगलिक दृष्टि द्वारा जनमानस की नैसर्गिक जीवन की अभिव्यक्ति को लोक कल्याणार्थ सहज व आदर्श रूप में प्रस्तुत किया। जनता के गिरते नैतिक स्तर को उठाने के लिए उन्होंने श्रीराम के दिव्य चरित्र व शील स्थापना के प्रति अपनी प्रतिबद्धता ज्ञापित की। सत्य, र्ध, न्याय, मर्यादा, विवेक और आचरण जैसे मूल्यों की प्रतिस्थापना के प्रति तुलसी सदैव सचेत रहे। अपनी विशाल समन्वयकारी बुद्धी का सदुपयोग कर लोकदर्शी तुलसी ने मानस में समन्वय का जो आदर्श प्रस्तुत किया, वह अविस्मरणीय है। शक्तिशील और सौंदर्य ही उनके लोककल्याणकारी भावना का प्रमाण है। मध्यम मार्ग को अपनाते हुए तुलसी ने वर्णाश्रम धर्म की प्रतिष्ठा कर केवल प्रसंग द्वारा भक्ति के क्षेत्र में ब्राम्हण और शुद्र को समान स्थान दिया। भक्ति की रक्षा हेतु उन्होंने आत्मपक्ष और लोकपक्ष में एकात्मकता स्थापित कर समाज के उन्नयन का प्रयास किया। इन सभी गुणों का समन्वित रूप राम के चरित्र में दिखाकर धर्म के अति सहज मार्ग की नयी नींव रखी।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में, "भारत का लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय कर सके। भगवान कृष्ण और बुद्ध देव समन्वय करने में सफल हो सके थे।"' तुलसीदास के समय में भी भारतीय समाज में आंतरिक एवं बाध्य दोनों प्रकार की विश्रृंखलता फैल रही थी। समाज के सामने कोई उच्च आदर्श नहीं था। उच्च वर्ग विलासी था। निम्न वर्ग की दशा अत्यंत हीन थी। वे दरिद्र अशिक्षित और रोग ग्रस्त होने के कारण अत्याचारों के शिकार बन रहे थे। बैरागी को जाना साधारण बात थी। एक ओर संत नामधारी साधु वेद,

पुराण की निंदा कर अपने मत का प्रचार कर रहे थे, दूसरी ओर योगमार्गी अपने चमत्कारों से लोगों को भ्रमित एवं आतंकित रहे थे। नाना संप्रदायों का प्रादुर्भाव हो चुका था और हो रहा था। संत महात्माओं के कारण नीम्न जातियों में आत्मविश्वास भर गया था, परंतु वे अशिक्षित और असंस्कृत अपने दुरूह गर्व के कारण मिथ्या विचार एवं झूठे अहं का प्रचार कर रहे थे।

प्रतिभाशाली कवि तुलसी ने भारतीय संस्कृति एवं युग जीवन का विशद प्रतिबिंब और सर्वोदय रामराज्य की स्थापना का महान संदेश अवधपति राम के माध्यम से प्रस्तुत किया। रामचरितमानस दो माध्यम से भगवान राम की शील, भक्ति सौंदर्य के सगुण आराध्य दो रूप से भक्ति साधना तुलसी ने .... जातीय जीवन से सजीवन संचेतना का संचार किया। एक ज्ञान भक्ति और कर्म से समन्वित अध्यात्मिक साधना और दूसरी तेज और प्राज्वल्यमान तुलसी की साधना से सिंचित भारतीय संस्कृति को आत्मगौरव प्रदान कर उसे पुनर्जीवित बना दिया।

तुलसी साहित्य मे शिष्ट संस्कृति व लोकसंस्कृति दोनों का श्रेष्ठ सम्मिलन है, जहाँ सम्मिलन है, जहाँ एक ओर उन्होंने शिष्ट संस्कृति द्वारा आदर्श जीवन मूल्यों की स्थापना की, वही लोक संस्कृति द्वारा जीवन को गहराई से समझाने का आधार दिया। विराट भारतीय संस्कृति का नेतृत्व करते हुए तुलसी ने मान्दीय एकता, समता, विश्वबंधुत्व, आपसी भाईचारे की स्थापना की और उन्हे न्याय दिया। मानव–जीवन की गहन आस्थाओं व अनुभूतियों के प्रतीक रीतिरिवाजों व पवित्र संस्कारों के अतिरिक्त तुलसी साहित्य में समाविष्ट विविध देवी–देवताओं की मंगल, पूजा, व्रत, उपासना, ज्ञान, कर्म, भाग्य, ज्योतिष आदि विषयों की गूढ चर्चा हमे अपनी भारतीय संस्कृति का बोध कराकर स्थिति शील व विकासशील बनती है। संपूर्ण तुलसी साहित्य में प्रेम भाव के वर्णन में चाहे कितनी रसमयता, गहनता व श्रृंगारिकता क्यों न हो, नारी की गरिमा और रिश्तों की मर्यादा का कहीं भी उल्लंघन नहीं है। तुलसी का साहित्य जीवन रसक संजीवनी के समान निर्जीव प्राणियों मे चेतना का संचार कर रहा है। उनके साहित्य में काव्य कौशल और लोकमंगल की चरम परिणति है जो मुक्तमणि के समान सुंदर और मूल्यवान है।

गोस्वामी तुलसीदास जी के साहित्य में जीवन की सभी परिस्थितियों का वर्णन है। उन्होंने प्रत्येक काव्य में मानवीय संवेदना की अभिव्यक्ति की है। वे राम के अनन्य भक्त है। उन्हें केवल राम पर ही विश्वास है। राम पर पूर्ण विश्वास रखते हुए उन्होंने उनके उस मंगलकारी रूप को समाज के सामने प्रस्तुत किया है जो संपूर्ण जीवन को विपरीत धाराओं और प्रवासों के बीच संगति प्रदान कर उसे अग्रसर करने में सहायक है। तुलसी ने लोक में व्याप्त

अन्याय, अत्याचार, अनाचार पाखण्ड की धज्जियाँ उड़ाकर जिस विश्वास के लोकपावन, अमृतमयी वश का ज्ञान किया, वह मार्तण्ड के समान भटके हुए राहगीरों को राह दिखाने वाला है। भारतीय संस्कृति के संरक्षण तथा सामाजिक मर्यादा का आदर्श स्थापित करने में तुलसी का योगदान अप्रतिम है। वास्तव में तुलसी की साहित्य साधना हिंदी साहित्य की सामूल्य निधि है। एक प्रकार से तुलसीदास जी ने हिंदी साहित्य में क्रांति उत्पन्न कर दी है। जनता के हृदय से निराशा निकालकर आशा का संचार कर दिया। तुलसी के काव्य में कलापक्ष और भावपक्ष का मणिकांचन संगोग हुआ है। आपकी कविता में साम्प्रदायिकता की गंध नहीं है। हिंदी साहित्य आपका निरऋणी रहेगा।

संदर्भ

1. रामचरितमानस आलोचनात्मक अध्ययन–डॉ. तिवारी–पृ–46
2. गोस्वामी तुलसीदास के साहित्य का विशेष मुहायन–भगीरथ पृ. 77
3. गोस्वामी तुलसीदास के साहित्य का विशेष मुहायन–भगीरथ पृ. 115–124
4. कवितावली–तुलसीदास पृ. 51
5. निराला काव्य और व्यक्तित्व– डॉ. धनंजय वर्मा पृ. 38
6. आ. रामचंद्र शुक्ल त्रिवेदी पृ.सं.–67–68
7. आ. हजारी प्रसाद द्विवेदी हिंदी साहित्य का इतिहास
8. डॉ. नगेन्द्र तुलसी संदर्भ
9. डॉ. जयशंकर मिश्रा– प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास
10. डॉ. रामनाथ शर्मा– भारतीय समाज संस्थाएँ और संस्कृति
11. विश्वनाथ त्रिपाठी–लोकवादी तुलसीदास

हिन्दी विभागाध्यक्ष
हुतात्मा जयवंतराव पाटील महाविद्यालय
हिमायतनगर, जि. नांदेड (महाराष्ट्र)